बी० एड० - III Semester

हिन्दी - शिक्षण

कविता शिक्षण की आवश्यकता एवं महत्व

महत्व - (1) कविता में कल्पना पक्ष और बुद्धि-पक्ष का समावेश होता है।

(2) यह आनन्द की अनुभूति का सशक्त साधन है।

(3) कविता की मान्यता है कि जीवन सुन्दर है। यह जीवन के सौन्दर्य से व्यक्ति को परिचित कराती है।

(4) इसमें भाव-सौन्दर्य है, शब्द सौन्दर्य है, लय है, ध्वनि सौन्दर्य है, संगीतात्मकता है, सरलता है।

(5) यह मानव की संवेदना को प्रकट करने का अपूर्व साधन है।

(6) यह विद्यार्थियों में कल्याणकारी भावनाएँ विकसित करती है - वाल्मीकि रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत, रामचरित मानस, सूर सागर, कबीर- काव्य का इस सम्बन्ध में उदाहरण दिया जा सकता है।

(7) कविता अपने को सुख देती है। इसीलिए तुलसीदास ने कहा है - मैं यह रचना "स्वान्तः सुखाय" (अपने को सुख देने -

के लिए कर रहा है।

(8) कविता मानव-जीवन का हृदय पक्ष है। भक्ति का सम्बन्ध भी हृदय से है होता है। इसलिए भक्तगण प्राय: काव्य द्वारा अपने भक्तिभाव को प्रदर्शित करता है। जैसे - मीरा, रसखान, सूर, तुलसी आदि।

(9) कविता जो कुछ कहती है - मधुर और प्रिय शब्दों में कहती है। कटु और अप्रिय शब्दों का इसमें स्थान नहीं है।

(10) कविता मानव को अथाह शान्ति और विश्राम देती है। जब-जब मानव का चित्त अशान्त हुआ है, तब गुरुओं की वाणी ने, रामचरित मानस ने, सन्तों की वाणी ने, जो काव्यमय है, उसे इन सबसे एक अथाह शान्ति और विश्राम की प्राप्ति हुई है।

कविता शिक्षण के पाठ रूप - (विभिन्न प्रकार)

कविता के पाठ की दृष्टि से पाठ तीन प्रकार के होते हैं -

1. बोध पाठ
2. रस पाठ
3. उपयोजन पाठ

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Page :
Date : / /

(1) बोध पाठ –

जब कविता जटिल हो, उसमें प्रादेशिक भाषाओं के शब्द हों या ऐसे शब्द हों, जो अब प्रचलन में नहीं है तो छात्रों को उसे समझना कठिन हो जाता है।

यदि कविता की भाषा सहज है, सरल है, तो उसे बोध-पाठ के रूप में पढ़ाने की आवश्यकता नहीं।

बोध पाठ का शिक्षण क्रम इस प्रकार होगा –

सामान्य तथा विशेष उद्देश्य,

(1) पूर्व ज्ञान
(2) प्रस्तावना
(3) उद्देश्य कथन,
(4) प्रस्तुतीकरण

(क) आदर्श वाचन
(ख) अनुकरण वाचन
(ग) भाषायी अनुशीलन
(घ) रूप-बोध - कठिन शब्दों का सरलार्थ
(च) वस्तु-बोध - अन्तर्कथाएँ,
(छ) भाव-बोध के प्रश्न
(ज) अन्त में पुनः वाचन

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

(2) रस-पाठ - कविता की भाषा यदि सरल हो तो बिना बोध-पाठ का सहारा लिए उसे रस-पाठ के रूप में पढ़ाना चाहिए। इस पाठ के अन्तर्गत कवि के अन्तःकरण के भावों को ग्रहण करना होता है। इसमें इन बातों पर बल दिया जाता है: —

रस-पाठ का शिक्षण-क्रम इस प्रकार होगा —

(1) सामान्य तथा विशेष उद्देश्य
(2) पूर्वज्ञान
(3) प्रस्तावना
(4) उद्देश्य कथन
(5) कठिन निवारण
(6) प्रस्तुतीकरण

इसप्रकार रस-पाठ का उद्देश्य है - भाव-सौन्दर्य जाग्रत करना न कि कठिन्य निवारण।

(3) उपयोजन-पाठ - उपयोजन पाठ में दो कविताओं की तुलना की जाती है। यदि रस-पाठ में बीच-बीच में तुलना के लिए समभावी कविता प्रस्तुत की जाती है वह उपयोजन पाठ और रस-पाठ दोनों

Page :
Date : / /

का अपूर्व संगम है।
उपयोजन पाठ का शिक्षण-क्रम इस प्रकार होगा —
(1) सामान्य और विशेष उद्देश्य
(2) पूर्वज्ञान
(3) उद्देश्य-कथन
(4) प्रस्तावना
(5) प्रस्तुतीकरण

इसप्रकार बोध पाठ में भाषायी अनुशीलन और वस्तु-बोध पर विशेष रूप से बल दिया जाता है।
रसपाठ में भावानुभूति, रसानुभूति और सौन्दर्यानुभू पर विशेष बल दिया जाता है।
उपयोजन-पाठ का प्रधान उद्देश्य-दो कविताओं का तुलनात्मक अध्ययन। इसमें स्वाभाविक रूप से अधिग्राह्यता रहती है।

24/09/2020

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया